भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा : एक विहंगम दृष्टि (शोध - पत्रिका)

सिकदर आनवारुल इसलाम

हिन्दी साहित्य-गगन में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और असमीया साहित्याकाश में लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा उज्ज्वल नक्षत्रों के रूप में देदीप्यमान हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी दोनों साहित्यकारों ने अपने-अपने भाषा-साहित्य को काव्य, कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक, प्रहसन, अनुवाद,आलोचना, हास्य-व्यंग्यात्मक पुस्तक, पत्रकारिता आदि से इतना समृध्द किया कि उन्हें युग-निर्माता के रूप में आज भी स्वीकार किया जाता है। जिस तरह हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु के समकालीन साहित्य-काल को भारतेन्दु युग के नाम से जाना जाता है, उसी तरह असमीया साहित्य में बेजबरुवाजी के समकालील साहित्य-काल को बेजबरुवा-युग कहा जाता है।

जन्म : आधुनिक हिन्दी साहित्य के पथिकृत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र इतिहास प्रसिद्ध काशी के सेठ अमीचन्द के वंशज है। उनकी जन्मतिथि सितम्बर ९,१८५० ई. माना जाता है। भारतेन्द्र के पिता गोपालचन्द्र उपनाम गिरधर दास जी ब्रजभाषा के अच्छे कवि थे। पाँच वर्ष की अवस्था में माता और दस वर्ष की आयु में पिता को खोकर भरतेन्दु अनाथ हुए । लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा का जन्म सन् १८६४ ई. में लौहित्य (ब्रह्मपुत्र) के गोद में हुआ था। जिस समय उनके पिताजी दीननाथ बेजबरुवा नौकरी में स्थानान्तरित हेतु असम के नगॉव जिले से बरपेटा जिले में जलमार्ग से जा रहे थे, उसी समय आहतगुरि नामक स्थान पर लक्ष्मीपूर्णिमा के दिन उनका जन्म हुआ था। लक्ष्मीपूर्णिमा के दिन जन्म होने के कारण ही उनका नाम भी लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा रखा गया।

शिक्षा : शिक्षा के क्षेत्र में भारतेन्दु का स्वच्छन्द व्यक्तित्व स्कूल-कॉलेज की दीबारों मे बंध रहना पसन्द नहीं था। अतः कुशाग्र बुध्दि भारतेन्दु पं. ईश्वरदत्त से हिन्दी, मौलवी ताजअली से ऊर्दू तथा पं. नन्दकिशोर से अंग्रेजी का शिक्षा ग्रहण करने लगे। इसके अलावा अपनी प्रतिभा के बल पर उन्होंने पंजाबी,मारवाड़ी,बंगाली,गुजराती आदि अनेक प्रांतीय भाषाओंका ज्ञान प्राप्त किया। कहने की आवश्यकता नहीं कि उनकी विद्वता,बहुज्ञता,पाण्डित्य तथा बुध्दि का चमत्कार देखकर लोगों को आश्चर्य होता था कि इतनी अल्पावस्था में यह सर्वज्ञता।

विद्यार्थी जीवन में लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा भी अच्छे विद्यार्थी या कुशाग्रबुध्दि के नहीं थे। उनको स्कूल जाना या वहाँ की बँधेहुए शासन में रहना भाता नहीं था। स्वयं उन्हीं के शब्दों में –"सचाकै कबलै गले स्कूल लै जोआटो मोर मनत बर फाटकलै जोआ जेन लागिछिल।' (अर्थात सच कहा जाए तो स्कूल जाना मेरे लिए बड़े जेलखाने जाने जैसा लगता है।) वस्तुतः बेजबरुवा अपनी छात्रावस्था में 'छात्रानं अध्ययनं तपः' पर भरोसा नहीं करते थे। उन्होंने छात्रावस्था से ही असमीया साहित्य एवं संस्कृति की चर्चा प्रारंभ कर दिया था। कहा जाता है कि असम के जितने भी छात्र कलकाता में शिक्षा-प्राप्त करने जाते थे, वे लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा और चन्द्रकुमार आगरवाला को असमीया साहित्य के चाँद और सूरज मानते थे।

भारतेन्दु और साहित्यरथी की पदवीः बाबू हरिश्चन्द्र 'भारतेन्दु' की उपाधि और लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा को 'साहित्यरथी' की उपाधि किसी सरकार या किसी साहित्यक गोष्ठी से नहीं मिली थी। जम्मू के पंडित बाल शास्त्री ने व्यवस्था से कायस्थों की स्त्री बनाने के कारण हरिश्चन्द्र ने अपनी मैगजीन में एकबार 'जाति गोपाल' की शीर्षक से पंडितों की बड़ी खिल्ली उड़ाई। इस पर पं. रघुनाथ जी बहुत रुष्ट होकर बाबू साहब से बोले-

आप को कुछ ध्यान नहीं रहता कि कौन आदमी कैसा है, सभी का अपमान किया करते हो। जैसे आप अपने सुयश से जाहिर हो उसी तरह भोग विलास और बड़ो के सम्मान न करने से आप कलंकी भी हो, इसलिए आज से मैं आपको 'भारतेन्दु' के नाम से पुकारूँगा।

उपस्थित, सज्जनों तथा स्वयं हरिश्चन्द्र को यह नाम बहुत पसन्द आया। सन् १८८०,२७ सितम्बर को सारसुधानिधि में पं. रामेश्वर दत्त व्यास ने एक लेख में हरिश्चन्द्र को 'भारतेन्दु' पदवी से विभूषित करने के लिए प्रस्ताव किया। सारे देश ने इसे स्वीकार कर लिया। कालांतर मे हरिश्चन्द्र से भारतेन्दु नाम अधिक लोकप्रिय हुआ.....और साहित्य में यह नाम अमर हो गया।

पं. तीर्थनाथ शर्मा का ऐसा मानना है कि शेफालि (एक फूल का नाम है) कवि रत्नकान्त बरकाकती ने लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा को 'साहित्यथी'विभूषण से अलंकृत किया था। बेजबरुवा को दिये इस उपाधि का स्वागत हुआ। जिस समाज ने उन्हें 'साहित्यथी'की उपाधि दी थी उस समाज के प्रति बेजबरुवा ने भी यथाचित उत्तर दायित्व निभाया था। वे जीवन के आखिरी दम तक असमीया भाषा-साहित्य की सेवा में ही जुटे रहे।

व्यक्तित्व : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा- दोनों के व्यक्तित्व बहु आयामी थे.....। भारतेन्दुजी अंग्रेजीं के खिलाफ साहस और सकंल्प के साथ विद्रोह के स्वर व्यक्त करते थे। वे धर्म-निरपेक्ष, उदार, स्वाभिमानी,संकल्पशील,निर्भीक, समाजसुधारक, भाषाविद, विद्रोही तथा युग-प्रवर्तक रूप में ख्यात थे। राजभक्त होते हुए भी वे देशभक्त थे, हास्यभाव की भक्ति के साथ ही उन्होंने माधुर्य भाव की भक्ति भी की थी। उनमें अनोखी समन्वय-शक्ति थी। वे रीतिकालीन भी और आधुनिक भी थे, वे रसवादी भी रहे और अलंकारवादी भी। वे समाज की स्थितियों में भी थे और अंधविस्वासों तथा रुढ़ियों पर कठोर प्रहार भी करते थे। भारतेन्दु के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में कबीर तथा तुलसी के व्यक्तित्व का समन्वय प्राप्त होता हैं। कबीर की निर्भीक अभिव्यक्ति उनके बाद उसी दम- खम के साथ भारतेन्दु में ही मिलती है।

लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा के बहुआयामी व्यक्तित्व को देखते हुए ऐसा कहा जा सकता है कि वे हर क्षेत्र में अपनी पहचान बनाए रखते थे। उनकी स्वतंत्र मनोवृत्ति के कारण उन्होंने 'एकस्ट्रा एसिस्टेन्ट कमीशनर' जैसे पद को दो-दो बार ठूकराये थे। इस सम्बंध में उनका विचार थाकि वह स्वतंत्र रहकर श्रम करके जीविका का साधन जुटायेंगे परन्तु किसी की गुलामी करके नहीं। 'मइ स्वाधीनभावे परिश्रम करि एमुठि भात खाम,परर गोलामी करि नहय। तेनेहले मइ मरि जाम। स्वाधीन व्यवसाय बा चेष्टात मइ जदि बर डाड.र हब पारो भालेई,नहले नाइ।' (अर्थात मैं स्वाधीन होकर श्रम करके थोड़ा-सा खाना जुटाऊँगा, दूसरे की गुलामी करके नहीं। नहीं तो मैं मर जाऊँगा। स्वाधीन व्यवसाय या चेष्टा से अगर मैं बड़ा आदमी बन सकूं तो अछा है नहीं तो कोई बात नहीं।

लक्ष्मानाथ बेजबरुवा को उनके शसुरालवालें ने अनेक प्रकार से अपने साथ मिलाने की चेष्टा की थी और यह दिखाने का प्रयास किया था कि असमीया भाषा से बांगला भाषा समृद्ध है,फिर भी बेजबरुवा ने उनकी बातों में भ्रभित न होकर असमीया भाषा-साहित्य को प्रतिष्ठित कराने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। उन्होंने इसका महत्व बताया और तर्कसंगत असमीया भाषा-साहित्य-संस्कृति के प्रति सम्मान उत्पन्न करवाया।

साहित्यिक रचनाएँ : दोनों ही अपने-अपने साहित्य के अग्रदूत थे। कविता की रुचि भारतेन्दु में बचपन से ही थी। उनके जीवन का बहुमुल्य समय सदा लिखने-पड़ने में व्यतीत हुआ था। न जाने कितनी पुस्तकें प्रकाशित करवाकर उन्होंने मुफ्त बँटवा दी थी, जिससे लोगों में पड़ने का-चाव बढ़े। छोटे-से साहित्यिक जीवन में उनके द्वारा लिखित लगभव ५० काव्यकृतियाँ,१४ इतिहास-ग्रंथ.१६ धर्म-ग्रंथ, १३ स्कुट रचनाएँ,१५ सम्पूर्ण तथा २ अपूर्ण नाटक एवं 'नाटक' नामक निबंध उपलब्ध है। इनके अतिरिक्त अनेक लेख,निबंध,यात्रा-विवरण तथा कविवचनसुधा, हरिश्चन्द्र मैगजीन, बालबोधिनी आदि पत्रिकाओं का संपादन भी किया, जिनसे युग-युगान्तरतक उनकी कीर्ति-गाथा जगमगा रहेगी।

यह एक विचित्र बात है कि जिस बेजबरुवा का नाम असमीया भाषा-साहित्य के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा गया , उनका सर्वप्रथम साहित्य जगत में पदार्पण हुआ था बांगला भाषा के माध्यम से। कलकाता के जेनरल एसेम्बली कॉलेज में पड़ते समय बेजबरुवा को रवीन्द्रनाथ ठाकुर के साहित्य से विशेष प्रेरणा मिली थी।

आधुनिक असमीया साहित्य की पहली पत्रिका 'जोनाकी' (जुगनु) के माध्यम से बेजबरुवा ने साहित्य जगत में प्रवेश किया था। इस पत्रिका के प्रथम अंक (सन् १८८९) से ही बेजबरुवा रचित 'लितिकाई' नामक हास्य-प्यंग्य नाटक का प्रकाशन प्रारंभ हुआ था। कालांतर में बेजबरुवा ने साहित्य की हर विधाओं में लेखन कार्य किया। उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं -२ कवितासंग्रह में ७५ कविताएँ, ४ कहानीसग्रह में ७० कहानियाँ, ३ लोककथा और
३ बालसहित्य में ७० लोककथाएँ, पदुमकुमावँरी नामक उपन्यास, २५ निबंध, १ आत्मजीवनी और ४ जीवनी, १२ तत्वकथा और श्रीकृष्ण कथा, १२ नाटक तथा बेजबरुवा द्वारा लिखित ८ हास्य-व्यंग्यात्मक पुस्तकें उपलब्ध हैं। और एक उल्लेखनीय बात यह है कि यद्यपि उन्होंने सिर्फ ४ हास्य-व्यंग्यात्मक पुस्तकें लिखा था, पर उनके प्रायः हर कृति में हास्य-व्यंग्य का झलक मिलती है,जिनसे युग-युगान्तर तक उनकी कीर्ति- गाथा जगमगा रहेगी।

हास्य-व्यंग्य नाटकः भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा- दोनों बड़े फक्कड़ प्रवृत्ति के, विनोदी और परिहासप्रिय थे। समाज में व्याप्त अशिक्षा,अज्ञान,प्रपंच,जातिवाद तथा अनाचार के प्रति क्षुब्ध थे। इसलिए जब कभी भी जाति,एवं जातीय गौरव का अपमान होते देखते थे, वहीं हास्य-व्यंग्य लेखनी द्वारा उनका सफल पर्दाफाश किया करते थे। जन-जीवन में जागृति और उत्थान लाने के उददेश्य से ही इन्हेंने हास्य-व्यंग्य को साधन रूप में अपनाये थे, विशेषतः उनके द्वारा लिखित हास्य-प्यंग्य नाटकों में जागृति और उत्थान लाने के उद्देश्य से ही इन्हेंने हास्य-व्यंग्य नाटकों में इसका सफल प्रयोग किये थे। जिस तरह भारतेन्दु के अंधरे नगरी, वैदिकी हिंसा- हिसा न भवति,प्रेमजोगिनी,विषस्य विष मौषधम, भरत दुर्दशा, आदि हास्य-व्यंग्यात्मक नादक है, उसी तरह लितिकाई, पाँचनि,नोमल, चिकरपति-निकरपति, बेलिमार आदि बेजबरुवा द्वारा लिखित प्रमुख हास्य-व्यंग्यात्मक नादक हैं। दोनों साहित्यकारों ने कमजोरियों, विसंगतियों, कुरीति-कुसंस्कारों आदि से सम्बंधित त्रुटियों को हास्य-व्यंग्य के साथ अभिव्यक्त किया था। भारत तथा असम की तत्कालीन आर्थिक स्थिति पर, संस्कृति के नाम पर समाज में पनपनेवाली अपसंस्कृति पर, साहित्य के नाम पर अपसाहित्य रचनेवालों के प्रति,धर्म के नाम पर पनपनेवाली विकृतियों से लोगों को सचेत करने के लिए दोनों साहित्यकारों ने हास्य-प्यंग्य के अनेक चित्र प्रस्तुत किये थे। वस्तुतः भारतेन्दु और बेजबरुवा ने हास्य-प्यंग्य नामक शस्त्रों द्वारा सुगठित एवं व्यवस्थित मोर्चाबंदी करके अपने-अपने समाज की अनेक विकृतियों को सुधारने की कोशिश की थी। जहाँ भारतेन्दु के नाटकों में हास्य की अपेक्षा प्यंग्यं का पभाव अधिक है, वहीं बेजबरुवा के नाटकों में व्यंग्य की अपेक्षा हास्य की प्रधानता है।

रोग तथा देहावसानः दोनों साहित्यकार ने परोपकार, दानपुण्य, देश-सेवा मातृभाषा की उन्नति आदि कार्यों के लिए अपनी-अपनी अस्थावर सम्पत्ति का बहुत-सा अंश लगा दिया था। परिणाम स्वरूप भारतेन्दु को अधिक अर्थ-कष्ट भोगना पड़ा था। अल्पायु में ही उनका शरीर जर्जर हो गया था। सन् १८८२ में उदयपुर की लम्बीयात्रा से उनका शरीर और भी दुबला हो गया। वे बीमार पड़ गये और स्वास,खाँसी तथा बुखार तीनों प्रबल हो उठे। अन्ततोगत्वा सन् १८८५ ई. के ६ जनवरी रात एक बजे वे इस दुनिया से चल बसे। उस समय-बाबू साहिब की अवस्था कुल ३४ बर्ष ३ महीने २७ दिन १७ घण्टा ७ मिनट और ४८ सैकेन्ट की थी। सच कहा जाए तो आधुनिक हिन्दी के प्रवर्तक श्री भारतेन्दु ने पारम्परीन विचार धारा को तोड़ने के दुस्साहस कर हिन्दी साहित्य में क्रांतिकारी स्वर देकर एक नये युग को जन्म दिया था। यद्यपि भारतेन्दुजी इस दुनिया की आँखों से दूर होने के १२५ वर्ष बीत गए पर आज भी उनकी ज्योत्सना मंद नहीं हुई है।

सन १९३७ ई. अगस्त से बेजबरुवा रोगाग्रस्त होते है। समग्र असमवासी उनके आरोग्य हेतु मनौती मना रहे थे। लगभग एकसाल तक रोगाग्रस्त रहकरस २६ मार्च १९३८ ई. को डिब्रुगढ़ में बेजबरुवा ने अंतिम सांस लिया। लौहित्य के गोद में जन्मे बेजबरुवा के नश्वर शरीर लौहित्य (ब्रह्मपुत्र) में ही हमेशा के लिए विलीन हो गया। साहित्यरथी लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा की मृत्यु पर समग्र असमवासी शोकमग्न हो गये। असमीया भाषा-साहित्य के अप्रतिम सम्राट बेजबरुवाजी समग्र असमवासी को चिर ऋणी बनाकर चल बसे। इनके वियोग में विश्वकवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने भी इस प्रकार श्रध्दा तर्पण की थीः– 'भारतवर्षेर प्रत्येक प्रदेशे ताहार आपन भाषार पूर्ण ऐश्यर्य

उद्भावित हइले तबेई परस्परेर मध्ये निजेर श्रेष्ठ अर्घेर दान-प्रतिदान सार्थक हइते पारिबे एवं सेई उपलक्षेइ श्रध्दा समन्वित ऐक्येर सेतु प्रतिष्ठित हइबे। जीवने लक्ष्मीनाथ बेजबरुवार एइ साधना अतन्द्रित छिल। मृत्युर मध्य दिया ताहार एइ प्रभाव बल लाभ करुक एइ कामना करि।' (अर्थात भारत के प्रत्येक प्रदेश में उनकी अपनी भाषा की पूर्ण प्रतिष्ठा होने से ही परस्पर के बीच अपनी श्रेष्ठ अर्घ का दान-प्रतिदान सार्थक हो सकती है और इसी उपलक्ष्य में श्रद्धा समन्वित एकता की पुल निर्माण होगी। लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा जीवन भर इसी साधना के सजग प्रहरी थे। मृत्यु के माध्यम से उनका यह प्रभाव और अधिक प्रभावशाली होने की कामना करता हूँ।)

अतः बहुमुखी प्रतिभा, गंभीर मातृभाषा प्रेम आदि गुणों के कारण बेजबरुवाजी ने असमीया भाषा साहित्य को उस मंजिल तक पहुँचाया,जहाँ अन्य भारतीय साहित्य के साथ खड़ा होकर असमीया साहित्य भी अपने को गौरवान्वित महसूस कर सकता है। व्यापक दृष्टि से देखा जाय तो यह स्पष्ट है कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जिस तरह आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता है, उसी तरह बेजबरुवाजी आधुनिक असमीया साहित्य के मुख्य प्रवर्तक है। दोनों की लेखनियों में राष्ट्रीयता, तथा देशोद्धार की भावना प्रवल थी। वे अपने-अपने समाज में व्याप्त राजनीतिक,सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक तथा साहित्यिक विकृतियों को दूर करने की चेष्टा की थी। दोनों साहित्यकारों में अपनी-अपनी भाषा के प्रति अटूट निष्ठा थी। भारतेन्दु जहाँ उर्दू की जगह हिन्दी के पक्षधर थे, बेजबरुवा वहाँ बांग्ला की जगह असमीया भाषा-साहित्य को हर प्रकार से प्रतिष्ठित कराने के हिमायती थे। भारतीय जीवन एवं विरासत के प्रति श्रधाशील भारतेन्दु और बेजबरुवा ने समाज से विसंगतियों को दूर करके स्वस्थ परम्परा कायम करना चाहते थे जिससे सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् का भव्य रूप से भारतीय जीवन महके।

सिकदर आनवारुल इसलाम
असि. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
खारुपेटीया कॉलेज,दरंग (असम)

सहायक ग्रंथ :

१. बेजबरुवा ग्रंथावली
२. ब्रजरत्न दास–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
३. हेमन्त शर्मा (सं.)– भारतेन्दु समग्र
४. डॉ. उपेन्द्रचन्द्र लेखारु–साहित्यरथी लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा
५. प्रो. भुपेन्द्र राय चौधुरी (सं.)– हिन्दी काव्य सुधा।